International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

हिन्दी के साथ ही भारत और सनातन जुड़ा है

Raahul Raaj

Student, University Of Delhi

Abstract

भारत केवल एक भौगोलिक इकाई नहीं, बल्कि एक आध्यात्मिक और सांस्कृतिक चेतना का प्रतीक है। इस चेतना को जीवंत बनाए रखने में हिन्दी भाषा, सनातन धर्म और भारतीय संस्कृति का अद्‌वितीय योगदान है। हिन्दी न केवल संवाद का माध्यम है, बल्कि यह हमारे धार्मिक ग्रंथों, लोक परंपराओं, भक्ति आंदोलन, वेदांत दर्शन, और राष्ट्रवाद का वाहक भी रही है।हिन्दी भारत की आत्मा और सनातन संस्कृति की अभिव्यक्ति भारत की संस्कृति सनातन धर्म पर आधारित है, जो कि "सत्य, धर्म, अहिंसा, प्रेम और कर्तव्य" जैसे मूल्यों पर टिका हुआ है। इन विचारों को जन-जन तक पहुँचाने में हिन्दी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

हिन्दी: धार्मिक और आध्यात्मिक भाषा

- प्राचीन भारत में संस्कृत धार्मिक और शास्त्रीय भाषा थी, लेकिन जब जनसाधारण को धर्म और आध्यात्मिकता से जोड़ने की आवश्यकता पड़ी, तो हिन्दी ने इसे सरल और सुगम बना दिया।
- तुलसीदास ने संस्कृत में उपलब्ध रामायण को "रामचरितमानस" के रूप में अवधी-हिन्दी में लिखा, जिससे यह सामान्य जनमानस तक पहुँची।
- संत कबीर, मीरा, सूरदास, रहीम जैसे भक्त कवियों ने हिन्दी में भजन, पद और दोहे रचे, जिससे भक्ति आंदोलन को जन-जन तक पहुँचाने में सहायता मिली।
- भगवद गीता, महाभारत और उपनिषदों के हिन्दी अनुवादों ने आम लोगों को सनातन धर्म के गूढ़ रहस्यों से परिचित कराया।

हिन्दी और भक्ति आंदोलन

- भक्ति आंदोलन भारतीय इतिहास का एक महत्वपूर्ण दौर था, जब भक्त कवियों और संतों ने ईश्वर की भक्ति को सरल, सहज और भाषा की बाधा से मुक्त किया।
- इस आंदोलन में हिन्दी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई क्योंकि संतों ने संस्कृत की जगह स्थानीय बोलियों में रचनाएँ कीं।

- उदाहरण के लिए, कबीरदास ने अपने दोहों के माध्यम से सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार किया और "संतों यह संसार झूठा" जैसे विचारों से ईश्वर की भक्ति का महत्व बताया।
- सूरदास ने कृष्ण भक्ति पर केंद्रित रचनाएँ लिखीं, जिससे भक्ति रस लोगों के हृदय में उतर गया है।

भारत को केवल एक राष्ट्र के रूप में देखना इसकी महिमा को सीमित करना होगा। यह सनातन धर्म, योग, ध्यान, वेदांत, और आध्यात्मिक ज्ञान का केन्द्र रहा है।

"सनातन" का अर्थ है "शाश्वत" या "सदियों तक चलने वाला।" यह कोई संप्रदाय विशेष नहीं, बल्कि एक जीवन शैली और आध्यात्मिक दर्शन है।

सनातन धर्म में कर्म, ज्ञान और भक्ति के माध्यम से मोक्ष प्राप्ति का मार्ग बताया गया है।यह धर्म न केवल मानवता, बल्कि प्रकृति, जीव-जंतुओं और संपूर्ण ब्रह्मांड के साथ सामंजस्य स्थापित करने की सीख देता है।

सनातन धर्म के मूलभूत सिद्धांत

में धर्म (कर्तव्य): प्रत्येक व्यक्ति को अपने कर्तव्यों का पालन करना चाहिए।कर्म (कार्यफल सिद्धांत): व्यक्ति जो भी कर्म करता है, उसका फल उसे अवश्य मिलता है।योग और ध्यान: आत्मा की शुद्धि और ईश्वर की प्राप्ति के लिए योग एवं ध्यान आवश्यक हैं।

अहिंसा और प्रेम: समस्त जीवों के प्रति करुणा और अहिंसा का भाव रखना आवश्यक है।

भारत ने सदियों से वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, योग और ध्यान के माध्यम से संपूर्ण विश्व को आध्यात्मिक ज्ञान दिया।गीता का "निष्काम कर्मयोग" का सिद्धांत आज भी संपूर्ण विश्व में प्रासंगिक है।सनातन धर्म केवल मंदिरों तक सीमित नहीं, बल्कि यह विज्ञान, खगोलशास्त्र, गणित, आयुर्वेद, और वास्तुशास्त्र का भी आधार है। हिन्दी: स्वतंत्रता संग्राम की प्रेरक शक्ति में जब भारत में अंग्रेजों का शासन था, तब हिन्दी भाषा स्वतंत्रता सेनानियों की आवाज बनी।

हिन्दी में लिखे गए क्रांतिकारी नारे जैसे "इंकलाब जिंदाबाद", "साइमन वापस जाओ", और "वंदे मातरम्" ने पूरे देश में ऊर्जा भर दी।

महात्मा गांधी, सुभाष चंद्र बोस, भगत सिंह और रामप्रसाद बिस्मिल जैसे महानायकों ने हिन्दी को जनजागरण का माध्यम बनाया।

राष्ट्र को जोड़ने वाली भाषा में भारत में अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं, लेकिन हिन्दी ने पूरे राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधने का कार्य किया।आज भी, हिन्दी लोकतंत्र, साहित्य, सिनेमा, और मीडिया की प्रमुख भाषा बनी हुई है।

हिन्दी और आधुनिक समाज में उसका योगदान में हिन्दी साहित्य और मीडिया

के अन्तर्गत हिन्दी साहित्य में प्रेमचंद, महादेवी वर्मा, रामधारी सिंह दिनकर, और हरिवंश राय बच्चन जैसे महान लेखकों ने अमूल्य योगदान दिया।

हिन्दी सिनेमा और समाचार पत्रों ने भी सामाजिक चेतना और राष्ट्रवाद को बढ़ावा दिया है।

डिजिटल युग में इंटरनेट और सोशल मीडिया के युग में हिन्दी का महत्व और भी बढ़ गया है।हिन्दी ब्लॉग, यूट्यूब चैनल, और डिजिटल कंटेंट ने हिन्दी को वैश्विक स्तर पर पहुँचाया है।

निष्कर्ष: "हिन्दी है, तो भारत है; सनातन धर्म है!"

राहुल राज